एम.एच.डी–2
आधुनिक हिंदी-काव्य

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने आधुनिक हिन्दी काव्य के कुल चौदह कवियों की कविताओं का अध्ययन किया है। इन कवियों की कविताएँ 'आधुनिक काव्य विविधा' में दी गई है। इन कवियों के काव्य से संबंधित आपको विभिन्न इकाइयाँ भी अध्ययन के लिए दी गई है। इनके अतिरिक्त आपको 'आधुनिक काव्य विवेचना' नामक पुस्तक भी अध्ययन के लिए दी गई है जिनमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों पर कई आलोचनात्मक लेख भी दिये गये है। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्नपत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ काव्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।
- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों और उनकी रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न कवि की विशेषता और उनके योगदान तथा उसके काव्य की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य कवियों और रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं।
- आपको विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।
- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन कमोबेश सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–2
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–2/टी.एम.ए/2017–18
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12x3=36

क) चर्चा हमारी भी कभी संसार में सर्वत्र थी,
वह सद्गुणों की कीर्ति मानो एक और कलत्र थी।
इस दुर्दशा का स्वप्न में भी क्या हमें कुछ ध्यान था?
क्या इस पतन ही को हमारा वह अतुल उत्थान था?
उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी,
जो हो रहा उन्नत अभी, अवनत रहा होगा कभी
हँसते प्रथम जो पद्म हैं, तम-पंक में फँसते वही।
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो अंत में हँसते वही।।

ख) कालिदास, सच-सच बतलाना
इंदुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे?
कालिदास, सच-सच बतलाना!

शिवाजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
घृतमिश्रित सूची समिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रन्दन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोये थे?
कालिदा, सच-सच बतलाना
रति रोई या तुम रोये थे?

ग) एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ –
'यह तीसरा आदमी कौन है'?
मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : 16×4=64

(क) साकेत के 'नवम सर्ग' की विशेषताएँ बताइए।
(ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्य की विशेषताएँ बताइए।
(ग) 'अंधेरे में' कविता का विश्लेषण कीजिए।
(घ) धूमिल की कविताओं की काव्यागत विशेषताएँ बताइए।

www.estu... The Hub for on... and E-boo...

ASSIGNMENT SOLUTIONS GUIDE (2017-2018)

M.H.D.-2

आधुनिक हिन्दी काव्य

Disclaimer/Special Note: These are just the sample of the Answers/Solutions to some of the Questions given in the Assignments. These Sample Answers/Solutions are prepared by Private Teachers/Tutors/Authors for the help and guidance of the student to get an idea of how he/she can answer the Questions given the Assignments. We do not claim 100% accuracy of these sample answers as these are based on the knowledge and capability of Private Teacher/Tutor. Sample answers may be seen as the Guide/Help for the reference to prepare the answers of the Questions given in the assignment. As these solutions and answers are prepared by the private teacher/tutor, so the chances of error or mistake cannot be denied. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing these Sample Answers/ Solutions. Please consult your own Teacher/Tutor before you prepare a Particular Answer and for up-to-date and exact information, data and solution. Student should must read and refer the official study material provided by the university.

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) चर्चा हमारी भी कभी संसार में सर्वत्र थी,
वह सद्‌गुणों की कीर्ति मानो एक और कलत्र थी।
इस दुर्दशा का स्वप्न में भी क्या हमें कुछ ध्यान था?
क्या इस पतन ही को हमारा वह अतुल उत्थान था?
उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी,
जो हो रहा उन्नत अभी, अवनत रहा होगा कभी
हंसते प्रथम जो पद्‌म हैं, तम-पंक में फंसते वही।
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो अंत में हंसते वही॥

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित है। इन पंक्तियों द्वारा कवि ने देश के स्वर्णिम एवं गौरवशाली अतीत को स्मरण करने के साथ वर्तमान अवनति एवं दुर्दशा पर दुख जताया है तथा देशवासियों को सावधान रहने का संकेत किया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि कभी ऐसा समय था जब संसार में चारों ओर हमारी धूम थी। सारा संसार हमारे गुणों एवं ज्ञान के प्रति नतमस्तक था। हमारे सद्‌गुणों की कीर्ति का हर कोई बखान करता था किंतु आज जो परतंत्रता के कारण हमारी दुर्दशा है कि कभी हमने उसके विषय में सोचा था। हमें स्वयं को इतना हीन माने लेंगे क्या कभी ऐसा विचार आया था। हमने जो यह कीर्ति हासिल की थी वह इस पतन की दशा तक जाने के लिए थी? आज जो हमारा देश इतना हीन, कमजोर और लाचार है वह कभी इतना उन्नत था कि संसार हमारे आगे झुकता था। कवि कह रहा है कि जिस प्रकार कमल के प्रथम खिलने वाले पत्ते अंधकार के कीचड़ में फँस जाते हैं उसी प्रकार ज्ञान का घमंड करने वाले भी जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं जबकि जो फूल मुरझाए रहते हैं अंत में वे हँसते हैं यानी गंभीर एवं धीर लोग ही आखिर में सफलता प्राप्त करते हैं। अत: हे देशवासियों निराश मत हो। धैर्य एवं साहस से स्थिति का मुकाबला करो। हम अपना खोया गौरव अवश्य वापस पा लेंगे।

विशेष–(1) गुप्तजी ने अपने अतीत की गौरव-गाथा पढ़कर, अपने पूर्वजों का कीर्ति-गान तथा उपलब्धियों का परिचय देते हुए आत्मसंतोषी,
शिक्षित, सक्षम तथा सुदृढ़ बनने की प्रेरणा की है।
(2) उन्नति के बाद अवनति तथा अवनति के पुन: उत्थान की बात को कवि समझाने का प्रयास कर रहा है।
(3) भाषा सरल, ओजयुक्त, खड़ी बोली हिंदी है।
(4) भारत के विश्व गुरु होने का संकेत भी इन पंक्तियों के माध्यम से कवि होता है।

(ख) कालिदास, सच-सच बतलाना
इंदुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे?

www.pdfstudymart.com Free Online Reading Material Books

कालिदास, सच-सच बतलाना!
शिवाजी की तीसरी आंख से
निकली हुई महाज्वाला में
घृतमिश्रित सूची समिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रन्दन सुन आंसू से
तुमने ही तो दृग धोये थे?
कालिदा, सच-सच बतलाना
रति रोई या तुम रोये थे?

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत काव्य पंक्तियां कविवर नागार्जुन द्वारा रचित कविता 'कालिदास' से ली गई हैं। जिसमें कवि ने इस बात को बताना चाहा है कि वह जनसामान्य तथा शोषितों के प्रति गहन करुणा को अनुभव करके उसे व्यक्त भी करना चाहता है–

व्याख्या–नागार्जुन जनसामान्य के बीच कविकर्म करने वाले कवि के अनुभवों को उजागर करते हुए उससे पूछता है कि कवि कालिदास जब इंदुमती की मृत्यु हुई थी तब क्या उसके पिता ही रोये थे, क्योंकि उसके रुदन के पीछे तुम्हारी ही करुणा तथा अनुभव विद्यमान थे जो कविता के रूप में उजागर हुए थे। जब शिव ने अपने क्रोध के आवेश में आकर कामदेव को जलाकर राख कर दिया था तो अपने पति की राख को देखकर रोने वाली रति का क्रंदन सुनकर तुम भी द्रवित होकर रोने लगे थे और रति के रुदन में तुम्हारा रुदन भी शामिल होकर कविता के रूप में महाकाव्य का रूप बन गया था।

वास्तव में कविता की इन पंक्तियों का मूल प्रतिपाद्य यह है कि कविकर्म जीवन में अनुभवों से स्वायत्त नहीं होता है। कवि के व्यक्तिगत सामाजिक अनुभवों से ही काव्यानुभवों की संरचना निर्मित होती है। जैसे कालिदास की आत्मपीड़ा से ही उनके काव्य के पात्रों की रचना हुई है। रचनाकार के अनुभव की छाया उसकी सर्जनात्मक कृतियों में प्रस्तावित होती है।

विशेष–(1) भाषा सामान्य बोलचाल की लय सुगम तथा सरल है।
(2) प्राचीन और पौराणिक प्रसंगों के आधार पर कवि के व्यक्तिगत सामाजिक अनुभवों को काव्यानुभवों की संरचना से जोड़ने का कुशल प्रयास किया गया है।
(3) संस्कृत युक्त तत्सम् शब्दों जैसे घृतमिश्रित, समिधा, दृग, क्रन्दन आदि का यथास्थान प्रयोग किया गया है।
(4) प्रगतिशील काव्यधारा के कवि होते हुए भी रचनाकार प्राचीन हिंदू प्रसंगों तथा वक्तव्यों से एकदम मुक्त नहीं है।

(ग) एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ–
'यह तीसरा आदमी कौन है'?
मेरे देश की संसद मौन है।

उत्तर–प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश सुदामा पांडे 'धूमिल' की कविता 'पटकथा' से अवतरित है। यह एक लंबी कविता है। इस कविता में स्वतंत्रता के समय जनता के जो सपने थे उनके मोहभंग होने की पीड़ा और दुख का मार्मिक वर्णन है। स्वतंत्रता के बाद आम जनता का जो पूँजीपति एवं स्वार्थी राजनेता शोषण कर रहे हैं, उसे कवि ने इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि हमारे मजदूर और किसान दिन-रात कड़ी मेहनत कर जो कुछ पैदा करते हैं, उससे सबका जीवन चलता है परंतु उनकी मेहनत का फल उन्हें ही नहीं मिलता। शोषक पूँजीपति न तो स्वयं मेहनत करता है और न ही मेहनत करने वालों को उनका हक देता है। वह अपने धन के बल पर मजदूरों का शोषण करता है। उसे किसी के दुख-दर्द से कोई लेना-देना नहीं है, उसका लक्ष्य केवल ज्यादा से ज्यादा धन कमाना है। शोषक पूँजीपति का यह शोषण आम जनता को भी दिख रहा है और हमारी सरकार को चला रहे राजनेताओं को भी, लेकिन वे सब चुप हैं क्योंकि वे स्वयं स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। वे शोषक पूँजीपतियों का शोषण में पूरा साथ देते हैं। आम आदमी सब कुछ चुपचाप सह रहा है और हमारी संसद उसकी दयनीय हालत पर मौन बैठी है।

विशेष–1. प्रतीकात्मक एवं सांकेतिक भाषा है, जो सामान्य पाठक के लिए कुछ कठिन है।

www.estudymart.com The Hub for online Reading and E-books

2. वचन वक्रता है

3. मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए–

(क) साकेत के 'नवम सर्ग' की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। भारतीय सामाजिक जीवन की संघटना का मूलाधार है परिवार तथा परिवार के सदस्यों का पारस्परिक सौहार्द एवं मर्यादाविहित सम्बन्ध, 'साकेत' में दशरथ और उनके परिवार का सुखमय, मर्यादाशील चित्र प्रस्तुत किया गया है। उसके पारिवारिक जीवन के चित्र अत्यन्त मधुर एवं आह्लादकारी हैं। सपत्नियां होते हुए भी दशरथ का जीवन आरंभ में कलहरहित एवं शांतिपूर्ण है। पिता-पुत्र, भाई-भाई, सास-बहू, पति-पत्नी, देवर-भाभी सब में सौमनस्य, सेवा एवं कर्त्तव्यपरायणता के भाव हैं। परिवार के सभी सदस्य शिष्टाचार, विनयशीलता, मर्यादा और त्याग का पालन करते हैं। राम पिता की आज्ञा से राज्य का लोभ त्याग कर वन को जाते हैं, कोमलांगी सीता राजमहल के सुख-भोगों को लात मार कर पति के साथ वन-वन भटकती हैं। लक्ष्मण भाई के प्रति प्रेम और सेवा भाव के कारण अपनी पत्नी उर्मिला को त्याग कर वनवास के समय भाई-भाभी की सेवा-रक्षा का दायित्व निभाते हैं। भरत सिंहासन पर स्वयं न बैठकर अपने भाई के प्रतिनिधि के रूप में उनकी चरण-पादुकाएं सिंहासन पर रख कर शासन का भार ढोते हैं। राजसुख को त्याग कर तपस्वी का जीवन बिताते हैं। बहुएं सास-ससुर की सेवा करती हैं और आत्म-संयम का जीवन व्यतीत करती हैं। इसी पारिवारिक आदर्श का परिणाम है कि सम्पूर्ण अयोध्यावासी उसका अनुकरण करते हुए अपना जीवन सुख-शान्ति से बिताते हैं,

नहीं कहीं गृह-कलह प्रजा में
हैं सन्तुष्ट तथा सब शान्त,
उनके आगे सदा उपस्थित,
दिव्य राजकुल का दृष्टान्त।

भारतीय संस्कृति के चिर-प्रचलित रीति-रिवाजों का भी 'साकेत' में वर्णन किया गया है। हमारे यहां किसी को विदा करते समय शोक प्रकट करना अशुभ समझा जाता है, मांगलिक अवसरों पर रोली और अक्षत का तिलक माथे पर लगाया जाता है, मृत्यु पर श्रद्धा-सहित श्रद्धा किया जाता है, पिता की अन्त्येष्टि क्रिया ज्येष्ठ पुत्र करता है–इन सबका संकेत 'साकेत' में मिलता है। इनमें से हम एक का उदाहरण देकर ही सन्तोष करेंगे। राज्याभिषेक के दिन माता कौशल्या पुत्र के मस्तक पर तिलक लगाने की बात कहती हुई सीता को आदेश देती हैं,

बहू! ला तनिक अक्षत रोली
तिलक लगा दूँ माँ बोली।

भारतीय समाज-व्यवस्था का मूलाधार वर्णाश्रम धर्म रहा है। गुप्तजी ने भी वर्णाश्रम धर्म को स्वीकार किया है, किन्तु उनकी श्रद्धा तुलसी के समान अन्धी नहीं थी, जो गुण-कर्म-हीन द्विज को भी वन्दनीय मानते थे। साकेतकार गुण-शील के आधार पर वर्ण-विभेद को स्वीकार करता है। वह अत्याचारी आततायी द्विज का वध भी दोषपूर्ण नहीं मानता,

द्विजता तक आततायिनी
वध में है कब दोषदायिनी।

राम का गुहराज के प्रति व्यवहार भी उनकी इसी आस्था को व्यक्त करता है। वे आश्रम-व्यवस्था में भी विश्वास रखते थे, तभी तो उन्होंने दशरथ के मुख से कहलवाया है,

गृहयोग्य बने हैं बन-स्पृही
वन-योग्य हाय! हम बने गृही।

भारतीय संस्कृति में अहिंसा पर बल दिया गया है। लेकिन आवश्यकता पड़ने पर मनु और कौटिल्य हिंसा करते हैं। गुप्तजी ने भी अपने ग्रन्थ 'साकेत' में इसी सिद्धान्त का समर्थन किया है। उनका कथन है कि स्वाधिकार की रक्षा के लिए हिंसा को अपनाना कोई बुराई नहीं। राम का चरित्र इसका ज्वलंत दृष्टांत है।

ान को हमारे यहां सदा तुच्छ दृष्टि से देखा गया है। 'साकेत' के राम कहते हैं कि वह आर्यों को यह बताने के लिए अवतरित हुए हैं कि धन तुच्छ है,

जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।

हमारे यहाँ की एक अत्यन्त प्राचीन उक्ति है, *"यतो धर्मस्ततो जय:"*। इसका समर्थन करते हुए गुप्तजी उर्मिला द्वारा साकेतवासियों को रण-सज्जा के समय उद्‌बोधन दिलाते हुए कहते हैं,

धर्म तुम्हारी ओर, तुम्हें फिर किसका भय है?

www.e-studymart.com The Hub for Online Reading and E-books

जीवन में ही नहीं, मरण में भी निज जय है।

इन सिद्धान्तों के पालन का ही परिणाम था कि अयोध्या का समाज अत्यन्त संगठित था, उनका जीवन सुख, शान्ति और समृद्धि से परिपूर्ण था, सब आनन्द से जीवनयापन करते थे,

स्वस्थ, शिक्षित, शिष्ट, उद्योगी सभी,
बाह्य भोगी, आन्तरिक योगी सभी।

× × ×

चोर की चिन्ता नहीं धन के लिए,
सर्वसुख हैं प्राप्त जीवन के लिए।

× × ×

साथ जिसके अश्व-गोशाला न हो?
धान्य-धन परिपूर्ण सबके धाम हैं,
रंगशाला-से सजे अभिराम हैं।

हमारे यहाँ तीर्थ-स्थानों की भी बड़ी महिमा गाई जाती रही है और तीर्थ-यात्रा और तीर्थ-स्थान को पवित्र कर्म माना जाता रहा है। साकेतकार ने 'साकेत' में अन्यान्य तीर्थ-स्थानों एवं पुण्य-भूमियों का स्तवन किया-कराया है। स्वयं जगन्माता सीता यदि गंगा की प्रार्थना करती हैं, तो कवि अयोध्या, सरयू नदी और चित्रकूट की दिव्यता, पवित्रता और महानता का वर्णन करता है। वह चित्रकूट को 'सिद्ध शिलाओं का आधार' कहता है, तो सरयू को स्वर्ग गंगा से भी महान् बताता है,

वह मरों को मात्र पार उतारती,
यह यहीं से जीवितों को तारती।

आर्यसमाजी न होते हुए भी गुप्तजी ने वेद-वाणी की गरिमा को स्वीकार किया, यह उनकी भारतीय धर्म-ग्रन्थों और वैदिक-संस्कृति के प्रति श्रद्धा का परिणाम है, तभी तो वह कहते हैं,

उच्चरित होती चले सदा वेद की वाणी।

भारतीय प्रारब्ध, विधि के विधान और भाग्य में विश्वास करने वाले रहे हैं। 'साकेत' के राम लक्ष्मण को समझाते हुए इसी का सहारा लेते हैं,

समझ लो, दैव की इच्छा यही है।

कैकेयी की ग्लानि मिटाने के लिए भी वह इसी भाग्यवाद एवं पूर्व-कर्म-फल का आश्रय लेते हैं,

माना आर्ये, सभी भाग्य का भोग है
किन्तु भाग्य भी पूर्व कर्म का योग है।

भारतीय संस्कृति में प्रारब्ध और पुरुषार्थ पक्षी के दो पंख बताए गए हैं, जिनमें एक की भी हानि या क्षति पक्षी को उड़ने नहीं देती, अत: दोनों ही आवश्यक हैं। इसीलिए वह कर्म पर बल देती है और अकर्मण्यता का तिरस्कार करती है। साकेतकार ने इसीलिए अपने पात्रों को अकर्मण्य, पलायनवादी और भाग्यवादी नहीं बनाया है, उन्हें कर्मशील चित्रित किया है। महारानी सीता, 'अंचल-पट कटि में खोंस कछोटा मारे' वृक्षों को सींचती हैं, कोल-किरात बालाओं को शिक्षित बनाती हैं, भरत और शत्रुघ्न अयोध्या के जनपद को अपने प्रयत्नों से समृद्ध बनाते हैं, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति वीर क्षत्राणियों के रूप में चित्रित की गई हैं, जिनमें राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट कर भरी है। कैकेयी यदि कहती है,

भरत जाएगा प्रथम और यह मैं जाऊँगी,
ऐसा अवसर भला दूसरा कब पाऊँगी।

तो 'साकेत' की अन्य माताएँ भी कर्मण्यता का भाव प्रकट करती हुई अपने बेटों को आदेश देती हैं,

जाओ बेटा, राम-काज, क्षण-भंगु शरीरा।

और पत्नियाँ भी अपने पतियों को राम के लिए लड़ने का आग्रह करती हैं और उन्हें कर्त्तव्य-प्रेरित करती हैं,

जाओ अपने राम राज्य की आन बढ़ाओ
वीरवंश की बान, देश का मान बढ़ाओ।

आधुनिक युग में सुधारवादी संस्थाओं ने समाज में नव-जागरण का मन्त्र फूंकते हुए नवचेतना का संचार किया था और सम्पूर्ण देश में नवीन क्रान्ति की लहर दौड़ गई थी। 'साकेत' में इस युग के आन्दोलनों, संघर्षों, क्रान्तियों, विचारों आदि की झलक किसी-न-किसी रूप में अंकित मिलती है। इसीलिए 'साकेत' को राष्ट्रीय जीवन का महाकाव्य कहा गया है।

www.pstudymart.com
The Hub for online Reading and E-books

गांधी युग का भारतवासी अन्यायी एवं अत्याचारी को समाज का परम शत्रु समझता था और उसके प्रति विरोध की भावना प्रकट करता हुआ उसके विनाश के लिए उद्यत था। वह जानता था कि अधिकार भिक्षा की तरह माँगने से नहीं मिलते, शक्ति से पाए जाते हैं। माता सुमित्रा इसी भाव को इस प्रकार व्यक्त करती हैं,

स्वत्वों की भिक्षा कैसी?

दूर रहे इच्छा ऐसी।

आधुनिक युग में राजतन्त्र के विरुद्ध बड़ी तीव्रता से विचार उठे हैं और प्रजातन्त्र को सुखद एवं समृद्धिकारी शासन-पद्धति माना जाता है। भरत के मुख से गुप्तजी ने यही कहलवाया है,

राज-पद ही क्यों न अब हट जाय?

लोभ-मद का मूल ही कट जाय?

गांधीजी के सत्याग्रह का प्रभाव भी 'साकेत' पर पड़ा है। अयोध्यावासी राम के वनगमन पर सत्याग्रह करते हैं,

जाओ यदि जा सको रौंद हमको यहाँ,

यों कह पथ में लेट गए बहु जन वहाँ।

पूंजीपतियों के प्रति आक्रोश का भाव भी 'साकेत' की राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करता है,

जो संग्रह करके त्याग नहीं करता है,

वह दस्यु लोक धन लूट-लूट धरता है।

ग्रामीण जीवन को समुन्नत बनाने एवं कृषकों के प्रति सहानुभूति का भाव भी राष्ट्रीयता का परिचायक है,

हम राज्य लिए मरते हैं?

सच्चा राज्य परन्तु हमारे कर्षक ही करते हैं?

गुप्तजी की राष्ट्रीय-भावना उनके निम्नलिखित शब्दों में तो स्पष्टत: ही ध्वनित होती है,

भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बन्धन में,

सिंधु पार वह बिलख रही है व्याकुल मन में।

भारतीय संस्कृति सदा से समन्वय पर बल देती रही है। जिस प्रकार तुलसी का भक्ति-मार्ग और जीवन-दर्शन समन्वयवाद पर अधिष्ठित है, उसी प्रकार गुप्तजी का धार्मिक दृष्टिकोण भी समन्वयवादी है। उन्होंने सीता, राम, भरत, मांडवी, जनक आदि के चरित्र द्वारा त्याग और भोग का, भक्ति और मुक्ति का, अनुशासन और विनय, भक्ति और ज्ञान, धर्म और राजनीति, प्रवृत्ति और निवृत्ति, भावुकता एवं कर्मपरायणता, कर्म एवं तपस्या आदि का समन्वय कराया है।

(ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्य की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–निराला हिंदी छायावादी काव्य के चार प्रमुख स्तंभों में दूसरे महान् स्तंभ माने जाते हैं। अत: उनके काव्य में भावना और शिल्प, दोनों ही दृष्टियों से छायावादी काव्य के अनेक गुण मिलते हैं। छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ काव्य है। उसमें कवियों ने स्वानुभूति की प्रत्यक्ष विवृत्ति की है। निराला ने इसकी ओर संकेत करते हुए लिखा है–'मैंने मैं शैली अपनायी'। स्पष्ट है कि उन्होंने अपनी कविता में अपने निजी दु:ख, मानसिक क्लेश और अंत:संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। उनका जीवन आरंभ से अंत तक अभावग्रस्त और क्लेशपूर्ण रहा। परिवार में पत्नी और पुत्री की अकाल मृत्यु ने उनके हृदय को गहरा आघात पहुंचाया। उधर समकालीन कवियों, आलोचकों, प्रकाशकों तथा संपादकों ने भी उनके साथ अन्याय किया। समाज के प्रहारों से भी उनका हृदय टूट गया। उनकी कविता में इसलिए विषाद और पीड़ा के स्वर प्रमुख हैं। 'सरोज-स्मृति', 'राम की शक्ति-पूजा' और स्फुट गीतों में सर्वत्र विषाद का स्वर सुनाई देता है। 'सरोज-स्मृति' में दो स्थानों पर उन्होंने आत्मग्लानि और आत्मभर्त्सना प्रकट की है,

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था

आगे चलकर भी वह लिखते हैं,

दु:ख ही जीवन की कथा रही

क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

'राम की शक्ति-पूजा' में राम के माध्यम से वे अपनी ही असफलता और पीड़ा को व्यक्त करते हैं,

धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध

धिक् साधन जिसका सदा ही किया शोध।

स्फुट गीतों में भी उनकी वेदना छलकती है,

मैं अकेला;

देखता हूँ,

www.pstbymart.com
The Smart Online Reading Books

आ रही
मेरे दिवस की सांध्य वेला।

छायावादी काव्य के प्रमुख विषय हैं–सौंदर्य-चित्रण और प्रणय-भावना। पूर्ववर्ती कवियों ने शृंगार रस की कविता लिखते समय प्रणय के शारीरिक पक्ष पर अधिक बल दिया था। उनकी प्रेम-भावना वासनामूलक थी, अत: उन्होंने नारी-सौंदर्य का चित्रण करते हुए नख-शिख पद्धति का आश्रय लेते हुए नारी के अंग-प्रत्यंग का कामोद्दीपक चित्रण किया है। छायावाद कवि निराला ने प्रणय की भावना को उदात्तीकृत किया है। यद्यपि आरंभ में उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए जो प्रणय का चित्र प्रस्तुत किया है, उससे शृंगारिक भाव स्थूल हो गया है, जैसे 'जूही की कली' की निम्नलिखित पंक्तियां देखिए,

निर्दय उस नायक ने निपट निठुराई की
सुंदर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली
मसल दिये गोरे कपोल गोल।

1. शोषितों की दीन-हीन दशा का चित्रण तथा उनके प्रति सहानुभूति का भाव–निराला में मानवीय करुणा बद्धमूल थी। वह दीन-दु:खियों का क्लेश देखकर सहज ही द्रवित हो उठते थे। इलाहाबाद के दारागंज मुहल्ले में रहते समय उन्होंने सर्दी में ठिठुरते भिखारी को अपनी रजाई दे दी थी, एक गरीब औरत द्वारा उन्हें बेटा पुकारने पर उसकी भरपूर सहायता की थी। अत: प्रगतिवादी कविताएं लिखने से पूर्व भी यदि उन्होंने 'भिक्षुक', 'विधवा', 'तोड़ती पत्थर' कविताओं में शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रकट की, तो इसका कारण उनकी सहज मानवता थी न कि मार्क्सवाद। भिक्षुक की दीन-दुर्बल दशा का यह चित्र कितना करुणोत्पादक है,

पेट-पीठ मिलकर दोनों हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुठ्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को।

इसी प्रकार 'बादल राग' कविता में किसान की जीर्ण-शीर्ण अवस्था का मार्मिक चित्र है,

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्र ही है आधार।

प्रकाशक तथा सम्पादक साहित्यकारों के प्रति कितनी उपेक्षा दिखाते थे, उनका कैसे शोषण करते थे, इसका कटु अनुभव स्वयं निराला को था। अत: उन्होंने 'सरोज-स्मृति' में ऐसा चित्र अंकित किया है, जिससे साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त अनीति का पता चलता है,

एक साथ जब शत घात घूर्ण
आते थे मुझ पर तूल तूर्ण
देखता रहा मैं खड़ा अटल

अथवा

पर सम्पादक गण निरानन्द
वापस कर देते पढ़ सरवर
दे एक-पंक्ति दो में उत्तर।

2. शोषकों के प्रति आक्रोश–अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वयं तथा अपने चारों ओर फैले समाज में अन्य अनेक लोगों को उन्होंने सम्पन्न, सत्ताधीश, प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा उत्पीड़ित होते देखा था। वह समझ गए थे कि यह पूंजीपति वर्ग समाज तथा देश के लिए अभिशाप है। अत: अनेक कविताओं में इस शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है। 'राजे ने अपनी रखवाली की' कविता में बताया गया है कि सत्ताधारी अपने स्वार्थ के लिए जनता को मूर्ख बनाते हैं और अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए सेना, पुलिस, कवि, नाटककार, धर्मगुरुओं तथा सामंतवर्ग का सहारा लेते हैं। 'कुकुरमुत्ता' में तो उनका स्वर और तेवर बहुत ही तीखे हो गए हैं,

अबे, सुन बे गुलाब
भूल मत गर पायी खुशबू, रंगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम।

www.studymart.com The Hub for online Reading and E-books

3. रूढ़ियों तथा परम्परागत मूल्यें पर प्रहार–निराला आरंभ से ही स्वतंत्र विचारक तथा विद्रोही स्वभाव के थे। परम्परागत मान्यताओं, रीति-रिवाजों तथा रूढ़िगत आचार-व्यवहार में उनकी तनिक भी आस्था नहीं थी। पत्नी की असामायिक मृत्यु के समय उनकी आयु ही कितनी थी। अतः सब लोगों ने यहां तक कि सास ने भी दूसरा विवाह करने के लिए बड़ा आग्रह किया, यह भी कहा गया कि उनकी जन्मकुण्डली में दो विवाह लिखे हैं, परन्तु उन्हें ज्योतिष, जन्मपत्री आदि में विश्वास न था, जन्मकुंडली की बात को गलत सिद्ध करने के लिए ही उन्होंने वह नन्हीं-सी बेटी को पकड़ा दी और उसने खेल समझकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उन्हें देख वह आह्लाद-उमंग से भर उठे,

संकेत किया मैंने अखिन्न
जिस ओर कुंडली छिन्न-भिन्न
देखने लगीं वे विस्मय भर
तू बैठी संचित टुकड़ों पर।

दहेज देने की न उनमें सामर्थ्य थी और न विश्वास अतः बहुत दिन तक पुत्री का विवाह नहीं हो पाया। ऊँच-नीच की भावना से ऊपर उठकर उन्होंने पुत्री के लिए ऐसा वर चुना, जो उनकी जाति वालों की दृष्टि में नीचा था, फलतः जातिवालों ने, गांव के पुरोहित ने, रिश्तेदारों ने विवाह का बहिष्कार किया। निराला ने इन सब की परवाह न की, स्वयं विवाह-मंडप रचा, स्वयं मंत्र पढ़े, विवाह-संस्कार किया। न बारात थी, न विवाह के अवसर पर रात-दिन होने वाले रीति-रस्म। उन्होंने स्पष्ट कहा है,

मेरे पूर्वज गण
गुजरे जिस राह वही शोभन
होगा, मुझको यह लोकरीति
कर दूं पूरी, गो नहीं भीति
कुछ मुझे तोड़ते गत विचार
पर पूर्ण रूप प्राचीन भार
ढोने में हूँ अक्षम, निश्चय
आयेगी मुझमें नहीं विनय।

क्रोधाविष्ट हो उन्होंने अपने जाति-भाइयों को गाली तक दी,

ये कान्यकुब्ज–कुल कुलांगार
खाकर पत्तल में करें छेद

'आ रे गंगा किनारे' कविता में धार्मिक अंधविश्वासों पर व्यंग्य किया गया है, तो 'दान' कविता में बंदरों को पुए खिलाने वालों और भूखे लोगों के प्रति उपेक्षा-भाव दिखाने वालों पर तीखे व्यंग्य-बाण छोड़े हैं।

4. क्रांति का उद्‌बोधन– निराला का अहिंसा, हृदय-परिवर्तन के सिद्धांत में विश्वास न था। 'राम की शक्ति-पूजा' तथा 'झींगुर डट कर बोल', में उन्होंने गांधीवादी नीति को असफल बताया है। 'तोड़ती पत्थर' में संकेत में दिया है कि श्रमजीवी एक दिन धनवानों पर प्रहार कर उनके आलीशान भवनों को ढा देंगे,

गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु मालिका, अट्टालिका, प्राकार।

'जागो फिर एक बार' कविता में भी प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास का स्मरण कराते हुए क्रांति करने का उद्‌बोधन किया गया है,

पशु नहीं, वीर तुम
समर-शूर, क्रूर नहीं
काल-चक्र में ही दबे
है नश्वर यह दीन भाव
कायरता, कामपरता
ब्रह्म हो तुम
जागो फिर एक बार

'बादल राग' कविता तो है ही विप्लव की कविता। वहां बादल 'विप्लव का वीर' है जिसका गर्जन सुन अट्टालिकाओं में रहने वाले पुरुषों की स्थिति अत्यंत दीन हो जाती है।

अंगना-अंग से लिपटे भी

www.pstudymart.com The Hub for Online Reading and E-books

आतंक-अंक पर कांप रहे हैं
त्रस्त नयन-मुख ढांप रहे हैं।

'एक बार बस और नाच तू श्यामा' में भी प्रलयकारी नृत्य का आह्वान किया गया है। 'राम की शक्ति-पूजा' में भी राम अन्यायी और अत्याचारी रावण के विरुद्ध युद्ध करते हैं।

इस प्रकार निराला के काव्य में क्रांति, विद्रोह, आततायी और अत्याचारी के विरुद्ध संघर्ष करने की ललकार बड़े सशक्त शब्दों में सुनाई देती है।

निराला मार्क्सवादियों की तरह वर्गहीन समाज की स्थापना, सम्पत्ति के समान वितरण का महत्त्व भी समझते हैं और इसका समर्थन करते हैं। 'वन बेला' तथा 'जल्दी जल्दी पैर बढ़ाओ' कविताएं इसकी साक्षी हैं,

'आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलो अंधेरे का ताला
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ

(ग) 'अंधेरे में' कविता का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–'अंधेरे में' कविता भाषा, काव्यरूप प्रतीक और बिंब-विधान की दृष्टि से तो मुक्तिबोध की श्रेष्ठ कविताओं में से एक है, उसका कथ्य भी महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर आज के समाज की विसंगतियों और विद्रूपताओं को देखते हुए। इस कथ्य को समझने और हृदयंगम करने के लिए आवश्यक है कि हम मुक्तिबोध के व्यक्तित्व से परिचित हों। मुक्तिबोध संवेदनशील हृदय वाले मानवतावादी कवि थे। उनकी मुख्य चिंता रही है,

सभी मानव,
सुखी, सुन्दर व शोषणमुक्त कब होंगे?

मुक्तिबोध का काव्य सत्, चित्, आनन्द का काव्य न होकर सत्, चित्, वेदना का काव्य है जिसमें उन्होंने सर्वहारा शोषित वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है। इस दृष्टि से 'अंधेरे में' कविता को मानवता का दस्तावेज कहा गया है। मुक्तिबोध ने मार्क्सवादी विचारधारा का अंधानुकरण नहीं किया, अपने देश की परिस्थितियों और विचारधाराओं के अनुरूप उसमें किंचित् संशोधन भी किया है। मार्क्सवादी विचारधारा से उनका सम्पूर्ण लेखन प्रभावित है और उसमें जगह-जगह विद्रोह और क्रांति के स्वर सुनाई देते हैं। उनके छोटे भाई शरतचन्द्र ने उन्हें 'टू रिबैल' (सच्चा क्रांतिकारी) कहा हैं। 'अंधेरे में' कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी उनके मार्क्सवादी रुझान की ओर संकेत करती हैं,

वर्तमान समाज में चल नहीं सकता
पूंजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता
स्वातंत्र्य व्यक्ति का वादी
छल नहीं सकता मुक्ति के मन को
जन को

मुक्तिबोध के व्यक्तित्व की एक अन्य विशेषता है उनका आंतरिक द्वंद्व, जिसके कारण वे अंत तक किसी बात का निर्णय नहीं कर पाते। उन्होंने स्वयं लिखा है–"*मानसिक द्वंद्व मेरे व्यक्तित्व में बद्धमूल है..... मेरी ये कविताएं अपना पंथ ढूंढने वाले बैचेन मन की अभिव्यक्ति हैं।*" 'अंधेरे में' कविता का अधूरा रहना भी इसी का संकेत है।

अपने युग की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों से क्षुब्ध कवि ने इस कविता में उन दमघोटूं परिस्थितियों का चित्रण किया है, जिनके कारण कवि के मन में चिंता, बेचैनी, कुछ करने की व्यग्रता उत्पन्न हुई। कविता में उस शोषण, दमन और अत्याचार के चित्र हैं, जिसने सामान्य जन-जीवन को यातनामय बना दिया है। कवि ने प्रोसेशन का चाक्षुष बिंब प्रस्तुत कर उन शक्तियों की ओर संकेत किया है, जिनकी मिलीभगत के परिणामस्वरूप जन-सामान्य यंत्रणा भोग रहा है,

टैंकदल, मोर्टार, आर्टिलरी सन्नद्ध
कई और सेनापति, सेनाध्यक्ष
उनमें कई प्रकांड आलोचक, विचारक, जगमगाते

कविगण

मंत्री भी उद्योगपति और विद्वान्

www.estudymart.com The Hub for online Reading and E-books

यहाँ तक कि शहर का हत्यारा कुख्यात
डोमा जी उस्ताद
यहाँ ये दीखते हैं भूत-पिशाच-काय

स्पष्ट है कि इस यातना और यंत्रणा के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है–पूँजीवादी समाज व्यवस्था और उसका पोषण करने वाला शासन-तंत्र। मुक्तिबोध को सबसे अधिक दु:ख और ग्लानि इस बात की है कि बुद्धिजीवी वर्ग जिसमें साहित्यकार, समाचार-पत्रों के संपादक और शिक्षक सभी आते हैं, इस पूंजीवादी व्यवस्था का क्रीतदास हो गया है।

सब चुप, साहित्यिक चुप और कविजन निर्वाक्
चिंतक, शिल्पकार, नर्तक चुप हैं
रक्तपायी वर्ग से नाभिनालबद्ध ए सब लोग
बौद्धिक वर्ग है क्रीतदास।

मध्यवर्ग भी अपनी संकीर्णता और स्वार्थपरता के कारण अपने कर्त्तव्य से च्युत हो गया है,

उदरम्भरि बन अनात्म बन गए।
लोकहित पिता को घर से निकाल दिया
जन मन करुणा सी मां को हकाल दिया
स्वार्थों के टेरियार कुत्तों को पाल लिया

सत्ताधारी लोग एक ओर प्रलोभन देकर विद्रोहियों को क्रांति करने से रोकते हैं और दूसरी ओर दमन, अत्याचार और उत्पीड़न द्वारा विद्रोह को समाप्त करने का प्रयास करते हैं। कविता में मार्शल लॉ तथा कवि की मानसिक उद्विग्नता को चित्रित किया गया है, जो उसे उस समय हुई थी, जब उसने शासनतंत्र में काले कारनामे देख लिए थे और शासन अपनी पोल खोलने की डर से उसे मिटाने के लिए कृतसंकल्प हो उठा था,

देख लिया हमको
व जान गया वह सब
मार डालो, उसको खत्म करो, एकदम
गैलरी से भागा मैं पसीने से सराबोर

एक अन्य स्थल पर मुक्तिबोध ने स्टूल पर बिठाकर सिर की हड्डी तोड़ने का लोमहर्षक दृश्य उपस्थित कर उस आतंक का संकेत किया है, जिसके द्वारा क्रांतिकारियों की जुबान बंद करने का प्रयास किया जाता था,

टूटे से स्टूल पर बिठाया गया हूँ
शीश की हड्डी जा रही तोड़ी
लोहे की कील पर बड़े हथौड़े
पड़ रहे लगातार
छिपे हुए प्रिंटिग प्रेस को खोजो
जहाँ कि चुपचाप ख्यालों के पर्चे
छपते रहते हैं, बांटे जाते
स्क्रीनिंग करो–मिस्टर गुप्ता
क्रॉस एक्ज़ामिन हिम थॉरोली

पूंजीवादी सत्ता वैचारिकता से लेकर आस्था और आत्मा तक को रौंदते हुए बुद्धिजीवियों, कथाकारों को अपना अनुचर बना लेता है। इस स्थिति को देखकर मुक्तिबोध और उनके समान-धर्मा साहित्यकारों पर जो प्रतिक्रिया होती है, उनके मन में जिस प्रकार का अंतर्द्वंद्व छिड़ जाता है और जिस यातना के बीच से वे गुजरते हैं, उस सबका चित्रण करना कवि का मुख्य उद्देश्य है। तत्कालीन परिस्थितियों का भयावह दृश्य केवल पृष्ठभूमि का काम करता है, वास्तविक दृश्य कवि के मन के अंतर्द्वंद्व का है। यह अंतर्द्वंद्व कविता की पहली पंक्ति से प्रारम्भ होता है और कविता के अंत तक चलता रहता है। यह द्वंद्व वास्तव में कवि के चेतन मन और अंतर्मन के बीच है। चेतन मन सुविधाभोगी है, समझौतापरक है और किसी प्रकार का कोई खतरा उठना नहीं चाहता। वह दुर्बल है,

कमजोरियों से लगाव है मुझको

अंतर्मन अपने दायित्व को समझता है। अत: स्थिति में परिवर्तन लाना चाहता है और उसके लिए विद्रोह और क्रांति करना चाहता है। वह क्रांतिकारी साहित्य लिखने के लिए व्यग्र है। चेतन और अवचेतन मन दोनों परस्पर विरोधी हैं–एक सुविधाभोगी है, खतरे उठाना नहीं चाहता, दूसरा अपना दायित्व समझकर बार-बार खतरे उठाने के लिए चेतन मन को उकसाता रहता है,

www.estudymart.com The Hub for online Reading and E-books

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब
पहुंचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार

कवि अपने अवचेतन मन की बात सुनकर विद्रोह और क्रांति करना चाहता है, पर उसका चेतन मन बार-बार उसे ऐसा करने से रोक देता है। मुक्तिबोध के इस अंतर्द्वंद्व को कविता में विभिन्न बिंबों द्वारा चित्रित किया है। सर्वप्रथम अंधेरी कोठरी में किसी की पदचाप सुनाई देती है, पर वह दिखाई नहीं देता,

सुनाई जो देता पर नहीं देता है दिखाई

तदुपरांत कवि का चेतन मन अवचेतन मन में उठने वाले विचारों को थोड़ा-थोड़ा समझने तो लगता है, पर पूरी तरह नहीं समझ पाता।

कौन वह दिखाई जो देता, पर नहीं जाना जाता है।

आगे भी कवि अंधेरी गुफा, उसमें बैठी हुई आकृति, मशाल और उसके बुझने से उत्पन्न स्थिति का चित्र अंकित कर अपने इस द्वंद्व को ओर संकेत करता है।

किसी खड़ी पाई की सूली पर मैं टांग दिया गया

अवचेतन मन को सुझाव देने के कारण ही कवि को यह यातना होती है। द्वार के बाहर किसी के द्वारा सांकल खटखटाने और उस आवाज को सुनकर सिटकिनी खोलने और आने वाले से मिलने का विचार तो आता है, परन्तु वह उठ नहीं पाता, क्योंकि वह भीरु और कायर है,

अरे हाँ, सांकल ही रह-रह, बजती है द्वार पर

.....

हृदय को देता है बिजली के झटके

पर कवि उठ नहीं पाता,

शक्ति ही नहीं है कि उठ सकूं जरा भी

.....

बजने दो सांकल
आप चला जाएगा आया था जैसा

इस चित्र में कवि ने सफल बिंब द्वारा उस आंतरिक द्वंद्व को साकार कर दिया है, जिसके बीच से कवि गुजर रहा है। अपने मन को समझाने के बाद भी कवि बेचैन है,

नहीं-नहीं उसको मैं छोड़ नहीं सकूंगा
सहना पड़े-मुझे चाहे जो भले ही

एक अन्य चित्र में भी जहाँ प्रात:काल के समय पानी की टोंटी से सूं-सूं की आवाज निकलने और जल के खंखारने का चित्र प्रस्तुत किया गया है, वहाँ भी कवि का अंतर्द्वंद्व मूर्तिमान हो उठा है,

यद्यपि आंगन में नल जोर मारता
जल खंखारता
किंतु न शरीर में बल है
अंधेरे में गल रहा दिल यह

इस प्रकार सम्पूर्ण कविता का कथ्य है कवि के चेतन और अवचेतन मन का द्वंद्व, अवचेतन मन का सुझाव न मानने और सुविधाभोगी जीवन बिताते रहने के कारण उत्पन्न होने वाली मानसिक यातना। इसी को आलोचकों ने अस्मिता की खोज और व्यक्तित्वांतरण के लिए प्रयास कहा है, जिसके लिए आवश्यक है श्रमिकों के संताप से द्रवित होना और युवा पीढ़ी को संघर्ष की प्रेरणा देना,

वह जल पीकर
मेरे युवकों में होता जाता व्यक्तित्वांतर
विभिन्न क्षेत्रों में कई तरह से करते हैं संगर

(घ) धूमिल की कविताओं की काव्यागत विशेषताएं बताइए।

उत्तर–समय परिवर्तनशील है, समाज और समाज की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, नए-नए प्रश्न नई-नई समस्याएं मानव-मन को उद्विग्न करती रहती हैं। जागरूक, संवेदनशील, समाज के प्रति अपना दायित्व समझने वाला साहित्यकार उनके विषय में सोचता है तथा

www.studymart.com The Hub for online Reading and E-books

अपने विचार प्रकट करता है। वह अनुभव करता है कि नए कथ्य को अभिव्यक्त करने तथा सम्प्रेषित करने में परम्परागत काव्य-भाषा तथा अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम पंगु और असमर्थ हो गए हैं, अत: वह नए उपकरणों की खोज करता है।

उपमान मैले हो गए हैं
प्रतीकों के देवता कर गए हैं कूच
वासन अधिक मांजने से
मुलम्मा छूट जाता है।

अज्ञेय के समान धूमिल ने भी यही अनुभव किया जो उनकी इस टिप्पणी से स्पष्ट हो जाता है,

छायावाद से कवि शब्दों को तौलकर रखते थे
प्रयोगवाद के कवि शब्दों का टटोलकर रखते थे
नई कविता के कवि शब्दों को गोल कर रखते थे
सन् साठ के बाद के कवि शब्द को खेल कर रखते हैं।

अप्रस्तुत विधान, बिम्ब, प्रतीक, काव्य-शिल्प के, अभिव्यक्ति के अनिवार्य, उपयोगी एवं प्रभावी उपकरण हैं। हाँ समय के साथ-साथ उनका स्वरूप बदलता रहता है। प्रयोगवादी कविता, नई कविता और साठोत्तरी हिन्दी कविता ने परम्परागत उपमानों, प्रतीकों और बिम्बों को भले ही अस्वीकार किया हो, परन्तु इन सबके काव्य में अलंकार, बिम्ब, प्रतीक आदि का प्रयोग हुआ है।

अलंकार-योजना–रीतिकाल के बाद कवियों ने कविता दामिनी के लिए अलंकारों का सायास प्रयोग करना अस्वीकार कर दिया। भारतेन्दु युग से आज तक के हिन्दी कवियों ने अलंकारों का, विशेषत: साम्यमूलक अलंकारों का प्रयोग तो किया है, पर उनकी अलंकार-योजना के पीछे आयास नहीं है, वे भावों के प्रवाह में स्वत: चले आए हैं और उनके प्रयोग से कथ्य मार्मिक एवं कथन-भंगिमा प्रभावी हो गई है। आज भी अप्रस्तुत-विधान का महत्त्व कम नहीं हुआ है। धूमिल ने अपनी कविताओं में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि साम्यमूलक अलंकारों का प्रयोग किया है। इनकी विशेषता यह है कि उनके उपमान नए, हट के, मौलिक हैं तथा वे साधारण जन-जीवन से चुने गए हैं। वे समकालीन जीवन की कटु और भयावह परिस्थितियों का, सामाजिक जीवन की विकृतियों, विसंगतियों, विद्रूपताओं को, उनकी भयावहता को, क्रूरता को अधिक व्यंजक और प्रभावी बनाकर प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने रूपक अलंकार का प्रयोग करते समय जो उपमान चुने हैं वे नए, ताजे तथा साधारण जीवन अनुभवों की कसौटी पर खरे उतरते हैं। उन्होंने संसद को सदस्यों और संसद की कार्यवाही को छल-छद्म, ढोंग, जनता के साथ विश्वासघात बताते हुए लिखा है,

संसद तेली की घानी है
जिसमें आधा तेल और आधा पानी है।

वर्तमान परिस्थितियों में उन्हें हर आदमी एक जूता लगता है, जिसे मरम्मत की दरकार है।

न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने
मरम्मत के लिए खड़ा है।

कविता को मुजरिम के कटघरे में खड़े एक बेकसूर आदमी का हलफनामा, आजादी को दरिद्र परिवार की बीससाला बिटिया कहना उनकी संवेदनशीलता के ही परिचायक नहीं हैं, उनकी मौलिक सूझ और कल्पना की ओर भी संकेत करते हैं।

रूपकों की तरह उनके उपमा अंलकार के प्रयोग में भी उपमानों का नयापन एवं जनजीवन से सम्पर्क झलकता है। कहीं वह अमूर्त के लिए मूर्त उपमान का प्रयोग करते हैं–वातावरण की भयावहता बताते हुए वह गली के अंधकार की तुलना पागल औरत के गाभिन पेट से तथा मातृभाषा की दयनीय स्थिति बताते हुए उसकी तुलना अपनी इज्जत बेचने के लिए विवश महरी से करते हैं,

सड़क के पिछले हिस्से में
छाया रहेगा
पीला अंधकार
गलियों में नंगी घूमती हुई
पागल औरत के गाभिन पेट की तरह

× × ×

तुम्हारी मातृभाषा
उस महरी की तरह है जो

www.estudymart.com The Hub for online Reading and E-books

महाजन के साथ रातभर
सोने के लिए, एक साड़ी पर राजी है।

पहले उदाहरण में सूक्ष्म और अमूर्त के लिए (पीला अंधकार) के लिए मूर्त, स्थूल उपमान (गाभिन पेट) का प्रयोग किया गया है तो निम्नलिखित पंक्तियों मे मूर्त के लिए अमूर्त उपमान का प्रयोग हुआ है,

देखते ही देखते एक परिचित चेहरा
किसी तत्सम शब्द की तरह अपरिचित हो गया है।

विषम परिस्थितियों में घिरे सामान्य व्यक्ति के गुस्से को चढ़ी नदी में सड़े काठ तथा उसके चरित्र को अंग्रेजी का आठ बताना भी उनके उपमानों की मौलिकता तथा ताजगी का परिचय देते हैं,

मेरा गुस्सा/जनमत की चढ़ी हुई नदी में
एक सड़ा हुआ काठ है
डमरू की तरह बजता हुआ मेरा चरित्र
अंग्रेजी का 8 है।

धूमिल गंवई और किसानी संस्कार के कवि हैं अत: उनके बहुत से उपमान ग्रामीण किसान-जीवन से लिए गए हैं,

बिना किसी घाव के शब्द
बाहर आ जायेंगे
जैसे परखी में बोरे का अनाज
चला आता है,

अथवा

मत वर्षा के इस दादुर-शोर में
मैंने देखा हर तरफ
रंग-बिरंगे झंडे फहरा रहे हैं
गिरगिट की तरह रंग बदलते हुए

बिम्ब सृष्टि–रसवादी आचार्यों के अनेक विचारों से असहमत होते हुए भी साठोत्तरी कवि आचार्य शुक्ल की इस मान्यता से सहमत हैं कि कविता का कार्य अर्थग्रहण कराना नहीं है, वे सुमित्रानन्दन पंत की तरह कविता को 'चित्रमय संगीत' भी मानते हैं। अत: उनके काव्य में बिम्बों का शब्द-चित्रों का प्रयोग जहाँ-तहाँ देखने को मिलता है। अन्तर केवल यह है कि उनके बिम्ब न तो राम की शक्ति पूजा 'राम' के बिम्बों के समान विराट् हैं; न प्रसाद जी और पंत जी के काव्य-बिम्बों की तरह कोमल और मसृण। वे प्रकृति के वैभवपूर्ण वातावरण से भी नहीं चुने गए हैं। धूमिल के बिम्ब प्रयोगवादी कवियों के वीभत्स 'मन की अंधियारी कोठरी में बूढ़ी वेश्या खांस रही है' और सैक्स से सम्बद्ध अश्लील भी नहीं हैं। कवि धूमिल के काव्य में कथ्य के अनुरूप या तो वे गंवई, किसान-जीवन से उठाए गए हैं अथवा शहर के सामान्य जीवन से। दूसरे, उनके बिम्ब उनकी कविताओं में उनके भावों-विचारों के साथ उसी प्रकार सहज रूप में चले आए हैं, जैसे सागर में ज्वार के समय लहरों के साथ चमकती सीपियां और छोटे-छोटे शंख उमड़ कर चले आते हैं। डॉ. नामवर सिंह ने साठोत्तरी कविता पर सपाटबयानी के आरोप का खंडन करते हुए कहा है कि कविता में बिम्बों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देना और अध्यापकीय आलोचना में कविता में केवल बिम्बों की खोज करना कविता के मर्म को समझने में बाधक है। उनका यह भी कहना है कि आलोचक सरल, बोलचाल की भाषा में रचे-पचे रोजमर्रा की जिन्दगी से लिए गए जाने-माने बिम्बों की अनदेखी करते हुए इन कविताओं पर सपाटबयानी का आरोप लगाते हैं।

धूमिल के काव्य के साथ भी यह अन्याय हुआ है। उनके काव्य में चाक्षुष बिम्ब भी हैं और श्रव्य बिम्ब भी। उनके बिम्ब चित्रमय तो हैं ही, अर्थव्यंजना कराने में भी वे बड़े उपयोगी हैं।

चाक्षुष बिम्बों में आकृति, रंग-रूप, गतिविधि शरीर की विचित्र भंगिमाएं साकार हो उठती हैं, तो श्रव्य बिम्बों में संगीत ध्वनियां मुखर हुई हैं। यहाँ हम केवल बानगी के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं,

चाक्षुष बिम्ब

तारों भरा आसमान/और
मरियल खौरहा कुत्ता
सीवान में पड़ी फसलों की लोथ का
सन्नाटा सूंघता है।

www.Studymart.com
Free Online Reading

यह बिम्ब स्थान, समय, परिवेश का वातावरण ध्वनित और साकार करता है। एक अन्य स्थान पर प्रयुक्त बिम्ब आततायी शासन की क्रूरता तथा उसके कारण देश की दयनीय स्थिति का चित्र प्रस्तुत करता है,

दीवारों से चिपके गोली के छर्रों
और सड़कों पर बिखरे जूतों की भाषा में
एक दुर्घटना लिखी गयी है
हवा से फड़फड़ाते हुए हिन्दुस्तान के नक्शे पर
गाय ने गोबर कर दिया है।

प्रतीक-विधान—पश्चिम के प्रतीकवादी आंदोलन ने हिन्दी कवियों तथा आलोचकों को भी प्रभावित किया और उन्होंने काव्य-रचना में प्रतीक प्रयोग पर बहुत अधिक बल दिया। इस आन्दोलन के पीछे एक ओर कवियों का उद्देश्य अपने पांडित्य, अपने ज्ञान, अपनी विद्वत्ता का रौब तथा दूसरी ओर पाठकों को आंतकित करना था। उनके लिए प्रतीक साधन न होकर साध्य बन गए थे। धूमिल आदि साठोत्तरी कवियों ने इस प्रवृत्ति का विरोध किया। धूमिल प्रतीक-प्रयोग के विरोधी नहीं थे, वे प्रतीकों का प्रयोग आवश्यक एवं उपयोगी मानते थे, बशर्ते कि प्रतीक-प्रयोग के पीछे कवि का उद्देश्य अपनी जटिल अनुभूति या विचार को अभिव्यक्त करने तथा उसे संप्रेष्य बनाने के लिए किया जाए और प्रतीकों की जड़ें समाज के जीवन और उस जीवन के अनुभवों में समाई हों तथा वे अर्थ-व्यंजना में सहायक हों। धूमिल के प्रतीक-प्रयोगों से उनकी प्रयोगधर्मिता, मौलिकता, प्रतिभा एवं ताजगी का पता चलता है तथा उनके उद्देश्य के अनुरूप वे समकालीन सामाजिक-राजनीतिक जीवन की विसंगतियों तथा विद्रूपताओं को उजागर करने में सहायक हुए हैं। प्रतीक-विधान तभी सफल और सार्थक माना जाएगा, जब वह यथार्थ पर आधारित हों। तथा पाठक-श्रोता के यथार्थ-बोध में सहायक हों धूमिल के काव्य में जिन प्रतीकों का प्रयोग हुआ है—जंगल, हरयाली, घास, पेड़, चेहरा, कमरा, लालटेन, कील, कुत्ता, रोशनी, सड़क, संसद, आंधी, अंधकार, दलदल आदि वे कवि के मन्तव्य को अभिव्यंजित करने में सफल कहे जा सकते हैं।

'जंगल' उनकी विभिन्न कविताओं में आया है, परन्तु भिन्न सन्दर्भों से जुड़कर वह भिन्न अर्थ देता है :

(1) मेरे चेहरे में, वे आंखें लौट आई हैं
जिनसे मैंने पहली बार जंगल देखा है।

(2) बस जरा-सी गफलत होती है और जंगल
आदमी की गिरफ्त से छूटकर
दीवारों की कवायद में
शरीक हो जाता है

इन दोनों उद्धरणों के भिन्न-भिन्न सामाजिक परिवेश की अर्थ-छवियां अभिव्यंजित की गई हैं। सड़क और संसद के प्रतीक भी राजनीतिक जीवन की विसंगतियों को उजागर करते हैं—संसद प्रतीक है सत्ताधारियों का, जो शासनतंत्र चला रहे हैं और सड़क सामान्य जनता का प्रतीक है। संसद तेल की घानी है, जिसमें आधा तेल और आधा पानी है और सड़क सामान्य जनता का,

इसीलिए बाहर आ
संसद के अंधेरे से निकल कर
सड़क पर आ।

प्रतीकों के सटीक एवं सोद्देश्य प्रयोग को देखकर ही धूमिल की काव्य-भाषा को प्रतीकात्मक सपाटबयानी कहा गया है। उनकी कविता सपाटबयानी लगती है, सपाटबयानी है नहीं। प्रतीकों का अर्थ और उनकी व्यंजना जानने पर गूढ़ार्थ का, सपाटबयानी में छिपे मार्मिक तथ्यों का उद्घाटन होता है और पाठक यथार्थ को पहचान लेता है। कवि ने प्रतीकों के माध्यम से अपने समय की परिस्थिति की भयावहता, जीवन की विसंगतियों-विद्रूपताओं—जन-सामान्य के अनिश्चय का शिकार होने, उनकी विवशता, भीरुता, सहनशीलता, विवशता आदि का तथा दूसरी ओर क्रूर, अत्याचारी पूंजीपतियों द्वारा प्रयुक्त छद्म तथा जनता के शोषण का संकेत किया है।

नाटकीय तत्त्व—जो आलोचक धूमिल के काव्य पर सपाटबयानी का आरोप लगाते हैं, पता नहीं क्यों वे उनकी कविताओं के उन स्थलों को भूल जाते हैं जहाँ कवि ने नाटक का शिल्प अपनाया है, नाटकीय तत्त्वों का समावेश किया है। 'संसद से सड़क तक' की अधिकांश कविताएं नाटकीय भंगिमा से ओतप्रोत हैं। 'मोचीराम' तथा 'पटकथा' उनकी सर्वाधिक नाटकीय तत्त्वों को अपनाने वाली रचनाएँ हैं। इनमें कोरी कथा नहीं है, सपाटबयानी नहीं है, नाटकीय भंगिमा के कारण ये रंगमंच पर अभिनीत दृश्य के समान पाठक को मुग्ध करती हैं—नाटकीय तत्त्व कविता में जीवन्तता पर देते हैं, नाटकीय तत्त्वों के सहारे कविता आगे बढ़ती है।

उनकी कविताओं में 'मैं', वह, वे, वह आदमी पात्रों की भूमिका निबाहते हैं। 'मोचीराम' में मोची तथा पाठक के बीच संवाद है:

बाबूजी सच कहूं—मेरी निगाह में
न कोई बड़ा है, न कोई छोटा है

www.studymart.com Free Hub for Online Reading and E-Books

मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है

'प्रौढ़ शिक्षा' कविता में एक पात्र दूसरे को आदेश देता है,

लालटेन की लौ जरा और तेज करो
उसे यहाँ
पेड़ में गली हुई कील से लटका दो
हाँ, अब ठीक है।

कहीं पात्र को सक्रिय होते दिखाया गया है,

सिगरेट का आखिरी कश खींचकर
मैंने उसे राखदान में डाल दिया है

तो कहीं पात्र की भाव-भंगिमा का चित्र प्रस्तुत किया गया है

राजी से उठी हुई आंखों ने मुझे
क्षण-भर टटोला
और फिर
जैसे पतियाये हुए स्वर में
वह हंसते हुए बोला–

कहीं दो पात्र परस्पर प्रश्नोत्तर करते दिखाए गए हैं,

कविता क्या है?
कोई पहनावा है?
कुर्ता-पाजामा है?
ना, भाई, ना
कविता
शब्दों की अदालत में
....
हलफनामा है।

इन स्थलों को पढ़ते समय पाठक की कल्पना के सम्मुख नाटक का एक सजीव दृश्य उपस्थित हो जाता है।

भाषा–धूमिल हिन्दी के उन आधुनिक कवियों में से एक हैं, जिन्होंने हिन्दी काव्य-भाषा को त्वरा, ऊर्जा, गतिशीलता प्रदान की है, हिन्दी कविता को नया डिक्शन दिया है, नई भाषा दी है, काव्य-भाषा की परम्परागत अवधारणा को तोड़कर उसे नए सिरे से परिभाषित किया है। बिम्बों, प्रतीकों, अलंकरण वाली भाषा के स्थान पर सरल बोलचाल की भाषा को सशक्त बनाया है, सही शब्दों की तलाश की है, जो सन्दर्भ से जुड़कर कोशीय अर्थ बरकरार रखते हुए अर्थ-विस्तार करते हैं, कविता को नया तेवर तथा नई शक्ति प्रदान करते हैं। उनकी कविता की भाषा अलंकरण एवं कृत्रिमता के कारण कविता के अर्थ को समझने में दीवार न बनकर सम्प्रेषण का कार्य सहज ही कर देती है। रेणु के शब्दों में धूमिल की भाषा भी कथा-कचहरी की भाषा अर्थात् सामान्य जनों की बोलचाल की भाषा है। ग्रामीण संस्कारों का कवि होने के नाते उन्होंने गाँव के व्यवसायों–चमार, लुहार, बढ़ई आदि द्वारा प्रयुक्त शब्दों का भरपूर एवं सार्थक प्रयोग किया है। 'मोचीराम' कविता में चमड़े के व्यवसाय जूते गांठने के काम से संबद्ध शब्द–राँपी, मरम्मत, टांके, नैवयल, धिश्शा दो, जूते को ऐसा बनाओ आदि का तथा 'लोहसाय' कविता में लुहार के कार्य से सम्बद्ध शब्दावली–कथायुन हथौड़ा, छेनी, संड़सी, पेंच, खराद, फाल, गंडासा, खुरपी, कुदाल आदि का प्रयोग किया गया है जिससे इन व्यवसायों से जुड़े व्यक्तियों, उनके कार्यों, उनकी मानसिकता तथा उनके परिवेश का चित्र सजीव और साकार हो उठता है।

■■

www.studymart.com
Online Reading
and E-books